विरुद्ध जनता को जागरूक करना था। प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित

उत्तर—फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को विभिन्न तरीके से किया?

प्रभावित किया है, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है-

(i) इटली-इटली उस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विधिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आयी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) जर्मनी पर प्रभाव-जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया।

(iii) पोलैण्ड पर प्रभाव-नेपोलियन ने स्वतंत्रता की लहर फ़ुँकी। पहले यह दास प्रथा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि पोलैण्ड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन इसी क्रांति ने ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।

(iv) इंग्लैण्ड पर प्रभाव-इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैण्ड पर इतना अधिक पड़ा कि वहाँ की जनता भी सामंतवाद के विरूद्ध आवाज उठाने लगी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैण्ड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमीन्दारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो गया।

प्रश्न 7. 'फ्रांस की क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, इस कथन

की पृष्टि करें।

उत्तर—सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, क्योंकि इस क्रांति के फलस्वरूप एक युग का अन्त हुआ और नए युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस क्रांति ने फ्रांस में राजतंत्र समाप्त किया तथा प्रजातांत्रिक शासन की स्थापत्य कर दी। सामाजिक व्यवस्था में बदलाव और स्वतंत्रता, समानता एवं बन्धुत्व की भावना का विकास हुआ। घटना थी।

प्रश्न 8. फ्रांस की क्रांति के लिए लुई XVI किस तरह उत्तरदायी

था। उत्तर-फ्रांस की क्रांति के लिए लुई XVI पूर्णत: उत्तरदायी था। वह सन् 1774 ई० में फ्रांस की गद्दी पर बैठा, जो अत्यधिक निरंकुश, फिजुलखर्च एवं अयोग्य था। वह विद्रोहियों को कुशलतापूर्वक दबाने का समर्थक था। उसका विवाह आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी अन्तोयनेत के साथ हुआ था। उसकी रानी भी फिजुलखर्च करती थी, तथा वह उत्सवों में काफी रूपये खर्च करती थी। वह अपने खास आदिमयों को उच्च पद दिलाने के लिए राजकार्य में दखल देती रहती थी। राजा के वसाय स्थित महल में 15 हजार अधिकारी ऐसे थे जो कोई काम नहीं करते थे, मगर अपार धनराशि वेतन के रूप में लेते थे। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भी राजा ने ब्रिटेन के विरूद्ध अमेरिका की आर्थिक मदद की। इससे राज्य का खजाना खाली हो गया। फलतः राजा ने अपने नियमित खर्च के लिए जनता पर करों का बोझ बढ़ा दिया। लुई XVI की निरंकुशता चरम पर थी, क्योंकि उसका कहना था कि ''मेरी इच्छा ही कानून है।' ऐसी स्थित में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करना अपराध था। इस प्रकार, लुई XVI की निरंकुशता, विलासिता, फिजुलखर्ची एवं स्वेच्छाचारिता फ्रांस की क्रांति का एक प्रमुख फांस की कांति में जैकोबिन दल की वया भूमिका थी? कारण था।

विरुद्ध जनता को जागरूक करना था।

प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित

किया? उत्तर—फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को विभिन्न तरीके से

प्रभावित किया है, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है-

(i) इटली-इटली उस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आयी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) जर्मनी पर प्रभाव-जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया।

- (iii) पोलैण्ड पर प्रभाव-नेपोलियन ने स्वतंत्रता की लहर फूँकी। पहले यह दास प्रथा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि पोलैण्ड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन इसी क्रांति ने ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।
- (iv) इंग्लैण्ड पर प्रभाव-इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैण्ड पर इतना अधिक पड़ा कि वहाँ की जनता भी सामंतवाद के विरूद्ध आवाज उठाने लगी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैण्ड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमीन्दारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो गया।

प्रश्न 7. 'फ्रांस की क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर—सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, क्योंकि इस क्रांति के फलस्वरूप एक युग का अन्त हुआ और नए युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस क्रांति ने फ्रांस में राजतंत्र समाप्त किया तथा प्रजातांत्रिक शासन की स्थापत्य कर दी। सामाजिक व्यवस्था में बदलाव और स्वतंत्रता, समानता एवं बन्धुत्व की भावना का विकास हुआ। एक गणरात्म एवं सम्प्रभूता सम्मन राज्य है। प्रश्न 2. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख

करें।

वत्तर-भारतीय सविधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नतिखित हैं-

(i) लिखित एवं विशाल संविधान-भारतीय संविधान लिखित एवं विश्व का सबसे विशाल संविधान है। वर्तमान संविधान में 395 अनुकोद, 22 भाग एवं 12 अनुस्थियों है।

(ii) समाजवादी राज्य-भारतीय सीवधान को 42वें संशोधन द्वारा भारत को समाजवादी राज्य घोषित किया गना। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में आर्थिक, राजनीतिक और आधिकारिक दुष्टि से समानता स्थापित करना होता है।

- (III) धर्मनिरपेक्षता—धर्मनिरपेक्षता भारतीय सर्विधान को एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। सर्विधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। इसके अनुसार, राज्य की दृष्टि से सभी धर्म समान है और देश के किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर धेरमाव नहीं किया जा सकता।
- (b) संसदीय शासन प्रणाली—संविधान द्वारा भारत में संसदीय राह्मन प्रणाली की स्थापना को गयी है। इस शासन प्रणालों के अन्तर्गत शासन की वास्त्रविक सत्ता मंत्रिपरिषद् में निहित होती है और मंत्रिपरिषद् व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इस प्रणाली में संसद के सदस्य जनता के प्रतिनिधि होते हैं।
- (v) स्वतंत्र न्यायपारितका—देश में एक स्वतंत्र न्यायपारितका भारतीय सविधान को एक महत्त्वपूर्ण विशोषता है। इसका काम संविधान की रक्षा करना एवं नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है।
- (vi) मौलिक अधिकार—मालीय सीवधान द्वारा नागरिकों को अनेक अधिकार दिए गए हैं, जिन्हें मौलिक अधिकार कहा जाता है। सॉक्धान में मौलिक अधिकारों को डिफाजट की भी व्यवस्था की गयी है, नागरिकों के सर्वागीण विकास के लिए ये अधिकार अति आवश्यक है।
- (vii) लोकतांक्रिक गणराज्य-भारत में स्टेंबधान द्वारा एक लोकतंत्रत्यक गणराज्य की स्थापना को गयी है। लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में जनता के प्रतिनिधि गणरान करते हैं। भारत को एक गणराज्य घोषित किया गया है। गणराज्य का ताल्पर्य यह है कि राज्य का प्रधान वंशानुगत न होकर जनता द्वारा निर्वाचित होता है।

*

4

可相を

H

प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित किया?

उत्तर—फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को विभिन्न तरीके से प्रभावित किया है, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है-

(i) इटली-इटली उस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आयी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) जर्मनी पर प्रभाव-जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया।

- (iii) पोलैण्ड पर प्रभाव-नेपोलियन ने स्वतंत्रता की लहर फूँकी। पहले यह दास प्रथा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि पोलैण्ड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन इसी क्रांति ने ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।
- (iv) इंग्लैण्ड पर प्रभाव-इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैण्ड पर इतना अधिक पड़ा कि वहाँ की जनता भी सामंतवाद के विरूद्ध आवाज उठाने लगी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैण्ड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमीन्दारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो गया।

व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारत में गरीबी उन्मूलन के लिए कई कार्यक्रम अपनाए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख है :-

(i) काम के बदले अनाज कार्यक्रम—यह कार्यक्रम उन सभी ग्रामीण गरीबों के लिए है, जिन्हें मजदूरी पर रोजगार की आवश्यकता है। इस मद में केन्द्रीय सरकार द्वारा नि:शुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है।

1.

2.

3.

5.

6.

7.

(ii) राज्य रोजगार गारंटी कोष-इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अगर आवेदक को 15 दिनों के अन्दर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया गया, तो उसे बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा।

(iii) जवाहर रोजगार योजना—इस योजना के अन्तर्गत सीमान्त किसान, कृषि श्रमिक आदि को उनके बेकार समय में पूरक रोजगार देने की व्यवस्था की गयी। इसके माध्यम से भूमिहीन परिवार के कम-से-कम एक सदस्य को 100 दिन का रोजगार मुहैया कराने की बात कही गयी।

(iv) प्रधानमंत्री रोजगार योजना—1993-94 में यह योजना शहरी क्षेत्र में बेरोजगार शिक्षित युवकों को स्वरोजगार मुहैया कराने के लिए प्रारम्भ की गयी थी। 1994-95 में इस योजना को ग्रामीण क्षेत्र के लिए विस्तारित किया गया।

(v) समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम—गरीबी निवारण के लिए इस कार्यक्रम को 1980 से देश के सभी प्रखण्डों में लागू किया गया। यह एक स्वरोजगार कार्यक्रम है जिसमें गाँवों के गरीबों को उत्पादक परिसम्पत्ति देकर उनकी आय में वृद्धि की जाती है ताकि वे अतिरिक्त आय अर्जित कर गरीबी रेखा से ऊपर उठ सकें।

आतः, पार्ग यहं पैधाने पर गरीयो मीजूद है प्रथम 3. भारत में अपनाए गए गतियो हमातन कार्यक्रमी की क्षा वर्ष वर्षात वहा विशे किया ध्याख्या की शिए। इस कराजाएं। उत्तर—भारत में गरीबी हेन्स्तिन के लिए कई कार्यक्रम अर्थ की उत्तर है जिनमें निम्मलिखिते प्रमुख है है (i) काम के बेट्ले अनाज कार्यक्रम यह जार्यक्रम उन सभी क्रमंग इ के लिए हैं कि अनाज कार्यक्रम यह जार्यक्रम उन सभी क्रमंग गरीकों को लिए हैं भिन्हें भिन्देरी पर रोबगार की आवश्यकता है। इस बद में केन्द्रीय सिक्टि में कंन्द्रीय सिक्ता विन्हें सेजदूरी पर रोजगार का लाकर कराया जाता है। (II) रोज्य ३ विरा विन्हालक स्वास्त्रल जपारका कराया जाता है। (ध) राज्य होता वि:शुल्क स्त्राधाल जयारच्य को अन्तर्गत असर व्य को रोजगार भारटी क्योध-इस कार्यक्रम को अन्तर्गत असर अवद्य को पित्रगार भारटी कोच-इस कावक्रम के वर्ग वर्ग के हो। 15 दिनों के अन्दर रोजगार उपलब्ध गड़ी कराया गया, से वर्ग वर्गकाति । ३ वटना नाएगा। पन्ना दिया जाएगा। (धा) विदाहर रोजपार पोजना-इस योजना के अनार्गत सोयन्त किरान विद्याहर रोजगार घोजना-इस योजना के पूर्व रोजगा देने को किया अधिक आदि को जनके बेक्स समय में पूर्व रोजगा देने को किया की काम को जनके बेक्स समय में पूर्व रोजगा देने को कर्माचा को गयो। इसके माध्यम से भूमितीन परिका के कम-धे-कम एक स्थान को गयो। इसके माध्यम से भूमितीन परिका के कम-धे-कम एक सम्बंधि को गयी। इसके माध्यम स भूगकार बात की बात कही गयी। सम्बंधि को 100 दिन का रोजगार मुहैया कराने की बात कही गयी। (1) प्रधानमंत्री रोजगार योजना (99) अ में यह क्षेत्रज शहरी क्षेत्र यं भेरो विचार शिक्षित युवकों को स्वरोजनार मुद्देश कराने के लिए प्रारम्भ पो राजी थी। 1994-95 में इस योगना को ग्रामीण क्षेत्र के लिए विस्तारित विकास कार्या। (v) समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम-गरीबी विकाश के लिए इस कार्यक्षण को 1980 से देश के सभी प्रख्यण्डों में लागू किया गया। यह एक रेवा को 1980 से देश के सका अध्यान की वार्यादक परिसम्पत्ति देश कार्यक्रम है जिसमें गीवों के गरीकों को अध्यादक परिसम्पत्ति देका विशेषा आय में धुद्धि की जाती है ताकि वे ऑसरिका अग्य अस्ति कर रेशका से क्या वट सके। रेखा से क्या वट सके। भारत में गरीकी उन्मूलन कार्यक्रमों की कांपयी बताये। ेलर भारत में गरीबी कम्मूलन कार्यक्रमते की कांग्रवी में मुख्य कभी पर है कि पारत में गरीबी जन्मूलन बाबक्रमा का बात होती है, लेकिन जसके ऑपकार्त स्थानकर इसकी लिए कार्यक्रम तो बना होती है, लेकिन जसके आधिकारो त्रसं कार इसको लिए कार्यक्रम ता क्या गाउँ। विकास कार्यक्रम को रहार कि क्षां कार्यक सरीको से कार्यान्तित गरी कर पाने। विकास कार्यक्रम की रहाश किया सरिकों से काणीत्वत नहीं कर नहीं के लेकिन अधिकारी है। जिस्काला काम किए ही लेख हो जाती है, लेकिन आधिकारी रीत जिस्सेकार कने रहते हैं। सन्य प्रशासन में स्थाप प्रशासन सभा राजनैतिक हरूकों ने रहते हैं। सन्य प्रशासन में स्थाप प्रशासन सभा गुजरेतिक हस्ताक्षेत्र को कारण इन कार्गक्रामों को लिए प्राप्त सींश का स्थित भावति तथा ज्ञान के कारण इन कार्गक्रामों को लिए प्राप्त को क्रिकी सन्त आवंटन तथा चण्यांग नहीं हो पाता है। इसके अलावा भाग के किसी राज्य को बोर्ट साकार हैं। नहीं हो पाता है। इसके अलावा भाग के किसी राज्य को केन्द्र साकार से अधाराहण साथा प्राप्त करने में कतियाई होती है। साथ शो अरावीटत राशि का विश्वासित कार्यक्रमी के विषय प्रयोग नहीं प्रोता है। आरः धारत में गारेबी तन्मृत्यन कार्यक्रम सफल नहीं की भागा। प्राप्त है, ब्रिहार में ग्रामीया गरीयों को मुख्य कारण कीन से हैं? इस समस्या के समाधान के लिए उपाय कराएँ। उभार - विहास में प्रामीण गांजी के अर्थक कारण है, किनमें विकासिक (1) जनसंख्या में मृद्धि-विशार में लेगी से बदली जनसंख्य क्रमीण प्रमुख है।-गरीयों का एक प्रमुख कारण है। जनसंख्या की अधिकार के कारण पत्री में लोगों को जीवन स्तर में संतोषननक सुधार नहीं हो पाता। (ii) बाद की समस्या-चित्रत में प्राय: हर साल बाद अरती है, जिससे फसला, घर, मण्डेकी आदि की शति होती है। बाद प्रधावित क्षेत्रों में रोजपार गुन्य को जाते हैं। इससे गरीकी रेखा के कापर चाले लोग भी गरीकी रेखा क्ष गोर्थ पान पाने हैं।

रूपरेखा स्पष्ट का गया हा साववान एक गणराज्य एवं सम्प्रभुत्व सम्पन्न राज्य है।

प्रश्न 2. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख

प्रतिनि

या र

भारत

का

अ

उत्तर-भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) लिखित एवं विशाल संविधान-भारतीय संविधान लिखित एवं विश्व का सबसे विशाल संविधान है। वर्तमान संविधान में 395 अनुच्छेद, 22 भाग एवं 12 अनुसूचियाँ है।

(ii) समाजवादी राज्य-भारतीय संविधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को समाजवादी राज्य घोषित किया गया। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में आर्थिक, राजनीतिक और आधिकारिक दृष्टि से समानता स्थापित

करें।

(iii) धर्मनिरपेक्षता-धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। संविधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। इसके अनुसार, राज्य की दृष्टि से सभी धर्म समान है और देश के किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

(iv) संसदीय शासन प्रणाली-संविधान द्वारा भारत में संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना की गयी है। इस शासन प्रणाली के अन्तर्गत शासन की वास्तविक सत्ता मंत्रिपरिषद् में निहित होती है. और मंत्रिपरिषद् व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इस प्रणाली में संसद के सदस्य

जनता के प्रतिनिधि होते हैं।

, (v) स्वतंत्र न्यायपालिका—देश में एक स्वतंत्र न्यायपालिका भारतीय संविधान की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसका काम संविधान की रक्षा

करना एवं नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है।

(vi) मौलिक अधिकार-भारतीय संविधान द्वारा नागरिकों को अनेक अधिकार दिए गए हैं, जिन्हें मौलिक अधिकार कहा जाता है। संविधान में मौलिक अधिकारों की हिफाजत की भी व्यवस्था की गयी है, नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए ये अधिकार अति आवश्यक है।

(vii) लोकतांत्रिक गणराज्य-भारत में संविधान द्वारा एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य की स्थापना की गयी है। लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में जनता के प्रतिनिधि शासन करते हैं। भारत को एक गणराज्य घोषित किया गया है। गणराज्य का तात्पर्य यह है कि राज्य का प्रधान वंशानुगत न होकर जनता द्वारा निर्वाचित होता है।

4 चनावी राजनीति

MATERIAL PARTIES AND ADDRESS OF THE PARTIES AND

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रथम 1. भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं की बतावें। वसर-भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं पर गीर करने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष-प्रतिवर्ष भारत की जनसंख्या वृद्धि की ओर अग्रसर रही है। 1951 ई० से 1981 ई० तक जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि नियमित रूप से यह रही थी। वहीं 1951 ई० में जनसंख्या 361 लाख थीं, वहीं 1981 में भारत की जनसंख्या 68 करोड़ से काम पहुँच गयी। जनसंख्या वृद्धि को दर 1951 ई० में 1.25%, 1961 में 1.96%, 1971 ई० तक 2.20% तथा 1981 ई० तक 2.22% थी। खेकन सरकार के प्रयास में जनसंख्या की वृद्धि पर में कमी आयी। सन् 1981 में वृद्धि दर घटकर 1991 ई० में 2.14% तथा 2001 ई० में 1.93% पर आ गयी।

दनसंख्या में बृद्धि दर घटने के बावजूद भी जनसंख्या में वृद्धि जारी रही। जो संख्या 1981 ई॰ में 68 करोड़ के लगभग भी, यह 1991 ई॰ में बढ़कर 84 करोड़ तथा 2001 ई॰ में 103 करोड़ के लगभग हो गयी। इस प्रकार 2011 ई॰ की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या बढ़कर 121 करोड़ से अपर पहुँच गयी। अत:, कहा जा सकता है कि भारत की

जनसंख्या में निरन्तर चृद्धि जारी है।

प्रथम 2. भारत के विषय जनसंख्या धनत्व का वर्णन करें।

उत्तर-जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य भूमि के प्रति इकाई पर अधिवासित होने वाली जनसंख्या है। भारत की जनगणना 2001 ई= के अनुसार, भारत का औसत जनसंख्या-घनत्व 325 व्यक्ति प्रति वर्ग कि॰मी॰ है, लेकिन इसमें भारत में विश्वमता है। भारत की जनसंख्या समान रूप से नहीं बसी हुई है। कहीं घनी आबादी है और कही कम आबादी है। मैदानी एन्यों में सर्वीधिक घनत्व है, ठरायो राज्यों में भी काफी घनत्व है, लेकिन पर्वतीय राज्यों में घनत्व कम पार्ग जाते हैं। पठारी राज्यों में सामान्य घनत्व की स्थिति है।

भारतीय राज्यों में सर्वाधिक घनत्व पश्चिम बंगाल का है। यहाँ औसतन प्रतिवर्ग किलोमीटर 904 व्यक्ति रहते हैं। दसके बाद क्रमश: बिहार तथा केरल का स्थान है, जहाँ का औसत घनत्व क्रमश: 881 तथा 819 व्यक्ति प्रति वर्ग किल्मील है। सबसे क्रम घनत्व अरूणाचल प्रदेश का है.

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं की बतावें। उत्तर—भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं पर गौर करने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष-प्रतिवर्ष भारत की जनसंख्या वृद्धि की ओर अग्रसर रही है। 1951 ई॰ से 1981 ई॰ तक जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि नियमित रूप से बढ़ रही थी। जहाँ 1951 ई॰ में जनसंख्या 361 लाख थी, वहीं 1981 में भारत की जनसंख्या 68 करोड़ से ऊपर पहुँच गयी। जनसंख्या वृद्धि की दर 1951 ई॰ में 1.25%, 1961 में 1.96%, 1971 ई॰ तक 2.20% तथा 1981 ई॰ तक 2.22% थी। लेकिन सरकार के प्रयास से जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी आयी। सन् 1981 में वृद्धि दर घटकर 1991 ई॰ में 2.14% तथा 2001 ई॰ में 1.93% पर आ गयी।

जनसंख्या में वृद्धि दर घटने के बावजूद भी जनसंख्या में वृद्धि जारी रही। जो संख्या 1981 ई॰ में 68 करोड़ के लगभग थी, वह 1991 ई॰ में बढ़कर 84 करोड़ तथा 2001 ई॰ में 103 करोड़ के लगभग हो गयी। इस प्रकार 2011 ई॰ की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या बढ़कर 121 करोड़ से ऊपर पहुँच गयी। अत:, कहा जा सकता है कि भारत की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि जारी है।